संपादकीय

नेपाल के प्रधानमंत्री ने चौंकाया भारत को

महज 36 साल की उम्र में नेपाल के प्रधानमंत्री बने बालेन शाह ने शपथ लेते ही जिस तरह से अपनी सक्रियता दिखाई है, उसको लेकर सबसे ज्यादा चर्चा उनकी भारत में ही रही है। उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में युवा लोगों को रखा है। भारत के पुराने धाकड़ राजनेता और राजवंश कहां चला गया, वह ढूंढने से भी नहीं मिल रहा है। बालेन शाह की कैबिनेट में शामिल सभी मंत्री उच्च शिक्षित और विशेषज्ञ हैं। मंत्रिमंडल की औसत आयु 38.21 वर्ष है। मंत्रिमंडल में 5 महिला मंत्रियों को स्थान दिया गया है। नेपाल के प्रधानमंत्री की कैबिनेट पूरी तरह से जेन-जी आंदोलन से निकलकर सत्ता के सिंहासन तक पहुंची है। भारत सहित विश्व के अन्य देशों में जिस तरह से नेपाल सरकार की चर्चा हो रही है। सरकार जिस तरह से काम कर रही है। उसकी प्रशंसा इन दिनों सारी दुनिया के जेन-जी में देखने को मिल रही है। नेपाल में पहली बार पारंपरिक राजनीति से हटकर युवाओं ने अपनी सरकार बनाई है। सरकार को लेकर विशेषज्ञता और समर्पण को महत्व देते हुए जिस तरह से कार्य करना शुरू किया है, उससे आशा की एक नई किरण देखने को मिल रही है। शपथ लेने के दूसरे दिन ही उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री को भ्रष्टाचार के आरोप में जेल भिजवा दिया। कठोर से कठोर निर्णय लेने में उन्हें कोई तकलीफ नहीं हो रही है। विदेशों में नेताओं और अधिकारियों के जमा काले धन को नेपाल वापस लाने की कार्यवाही शुरू कर दी है। बिना किसी लाग लपेट के प्रधानमंत्री और कैबिनेट के सदस्य नेपाल स्थित विभिन्न देशों के दूतावास पहुंच रहे हैं। जहां पर वह नेपाल के नए विकास मॉडल को लेकर विभिन्न देशों के राजदूतों से चर्चा कर रहे हैं। नेपाल की जरूरतों और विकास के लिए त्वरित निर्णय की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। नेपाल मंत्रिमंडल में प्रधानमंत्री सहित सभी मंत्री एक से एक बढ़कर एक हैं। कोई टेक्नोलॉजी से है, कोई पूर्व मेयर और संगीतकार रह चुका है। 2 मंत्री पीएचडी होल्डर हैं। वित्त मंत्री डा स्वर्णिम अर्थशास्त्र से पीएचडी कर चुकी हैं। विदेश मंत्री शिशा खनाल जिनकी उम्र 47 साल की है वह अमेरिका से पब्लिक पॉलिसी और पॉलिटिकल इकोनॉमी में स्नातक हैं। नेपाल में पढ़े-लिखे लोगों का मंत्रिमंडल है। ऐसा मंत्रिमंडल दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं है। दुनिया के अन्य देशों की तुलना में यह बिल्कुल अलग है। सबसे अच्छी बात यह है, सारे युवा मिलकर नेपाल को नई दिशा देने के लिए अपना अधिक से अधिक समय दे रहे हैं। इनकी ऊर्जा देखने लायक है। जिस तरह से यह सोच समझकर गंभीरता के साथ निर्णय ले रहे हैं। निश्चित रूप से उसके सुखद परिणाम कुछ ही महीनों में दिखना शुरू हो जाएंगे। 2 सप्ताह पुरानी सरकार 100 सूत्री शासन सुधार एजेंडा पेश कर चुकी है। इस एजेंडे पर काम भी शुरू कर दिया है। मंत्रालयों का पुनर्गठन, दक्षिण एशिया संघर्ष के प्रभाव, नेपाल के एनआईआर की सुरक्षा का कार्य, कार्की आयोग की रिपोर्ट पर कार्यवाही, संविधान संशोधन, पार्टी आधारित छात्र संघ व्यवस्था समाप्त करने, निजी अस्पतालों में 10 फीसदी मुफ्त बेड गरीबों के लिए। इस तरह स्वास्थ्य एवं रोजगार के लिए जिस तरह से सरकार ने काम करना शुरू कर दिया है, उसको देखते हुए, यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है, यदि यही उत्साह कुछ और समय तक बना रहता है तो आने वाले समय में नेपाल का भविष्य सारी दुनिया के लिए देखने योग्य होगा। नेपाल में अभी बहुत सारी चुनौतियां हैं। इसके बाद भी जिस तरह से नेपाल मंत्रिमंडल ने अपना एजेंडा लागू कर आम जनता को विश्वास में लिया वह महत्वपूर्ण बात है। नेपाल में सामाजिक, आर्थिक, न्याय, सुशासन, महंगाई और बेरोजगारी के क्षेत्र में जो प्रयास देखने को मिल रहे हैं, विश्वित रूप से नेपाल युवा पीढ़ी उत्साह में पुरानी बीमारियों को त्याग कर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है। उससे लगता है, नेपाल एक नए वैश्विक स्वरूप में स्थापित होने की दिशा में सफल होगा। जेन-जी ने जिस तरह से नेपाल की पुरानी सत्ता को उखाड़ कर नई सत्ता को स्थापित किया है, इस बात का असर कहीं ना कहीं अब भारत में भी दिखने लगा है।

श्रम की थकी हथेलियों से उठता प्रतिरोधः औद्योगिक भारत का नया अध्याय

(प्रथम पृष्ठ से जारी)

दबाव–ये सब मिलकर मजदूरों को ऐसे दायरे में कैद कर देते हैं, जहां से बाहर निकलना बेहद कठिन हो जाता है। यही मेहनतकश हाथ देश की अर्थव्यवस्था को गति देते हैं, लेकिन विडंबना यह है कि सबसे कम सुरक्षा और सम्मान भी इन्हीं के हिस्से आता है। जब श्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता, तो असंतोष का फूट पड़ना स्वाभाविक ही है। मजदूरों की आवाज केवल वेतन वृद्धि तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके अधिकारों और सम्मान से जुड़ी रही। उन्होंने न्यूनतम वेतन 18,000-20,000 रुपये करने, 12 घंटे की शिफ्ट की जगह 8 घंटे का कार्य समय लागू करने, समय पर बोनस और महिलाओं के प्रति सम्मानजनक व्यवहार की मांग की। कई कारखानों में वेतन पर्ची न देना, मनमानी कटौती और असुरक्षित कार्य परिस्थितियों सामने आती रहीं। कई मजदूरों ने महिलाओं के साथ उत्पीड़न और सुरक्षा की कमी की शिकायतें भी उठाईं, साथ ही अलग शिकायत समिति और सुरक्षित कार्य वातावरण की मांग की। स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में छोटी बीमारियां भी गंभीर समस्या बन जाती हैं। यही लंबे समय से दबी हुई मांगें आखिरकार सड़क पर उबल पड़ीं। उग्र हिंसा इस असंतोष की चरम अभिव्यक्ति हो सकती है, लेकिन यह किसी भी समस्या का समाधान नहीं बन सकती। नोएडा में हुई आगजनी और तोड़फोड़ ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब संवाद के रास्ते बंद हो जाते हैं, तो हालात तेजी से नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं। इस हिंसा ने न केवल सरकारी और निजी संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचाया, बल्कि आम नागरिकों के जीवन को भी प्रभावित किया और उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ऐसे में जरूरी है कि विरोध की ऊर्जा को रचनात्मक दिशा दी जाए और संवाद को प्राथमिकता दी जाए। घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सरकारी प्रतिक्रिया अभी भी अपनी सीमाओं में बंधी हुई है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा घोषित उपाय–जैसे साप्ताहिक अवकाश, ओवरटाइम का दोगुना भुगतान और स्वास्थ्य सुविधाएं– सकारात्मक जरूर हैं, पर वे समस्या की जड़ को नहीं छूते। न्यूनतम वेतन में वृद्धि की अनदेखी यह दर्शाती है कि सरकार अब भी मूल कारणों तक पहुंचने में पीछे है। जब तक मजदूरों की आय और उनके बढ़ते खर्चों के बीच संतुलन स्थापित नहीं होगा, तब तक ये प्रयास केवल अस्थायी राहत तक ही सीमित रहेंगे, स्थायी समाधान नहीं बन पाएंगे। तेजी से बदलते हालात यह संकेत दे रहे हैं कि समस्या अब स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर फैल चुकी है। देशभर के कई औद्योगिक क्षेत्रों (विशेषकर गुरुग्राम-मानेसर, सूरत, अलवर आदि) में मजदूर असंतोष बढ़ रहा है। यह स्थिति दर्शाती है कि देशभर में श्रम नीतियों की कमियां अब खुलकर सामने आ रही हैं। राज्यों के बीच वेतन असमानता और कमजोर कानून व्यवस्था ने इस संकट को और गहरा बना दिया है। यदि समय रहते इस पर प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो यह असंतोष आगे चलकर गंभीर सामाजिक और आर्थिक संकट में बदल सकता है। वक्त की मांग है कि अब समाधान की दिशा में ठोस और दूरगामी कदम उठाए जाएं। राष्ट्रीय स्तर पर न्यूनतम वेतन में एकरूपता, महंगाई से जुड़ी स्वचालित वेतन वृद्धि व्यवस्था, ठेकेदारी प्रथा में सुधार और श्रमिकों के लिए सशक्त सुरक्षा तंत्र का निर्माण अत्यंत आवश्यक हो गया है। साथ ही, सरकार, उद्योग और मजदूरों के बीच प्रभावी संवाद की व्यवस्था विकसित करना भी अनिवार्य है। नोएडा की घटना एक चेतावनी के रूप में सामने आई है–यदि इसे नजरअंदाज किया गया, तो यह चिंगारी बड़े औद्योगिक संकट में बदल सकती है। मजदूरों की आवाज को समझना और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करना ही सच्चे और संतुलित विकास का आधार है।

कहानी

ग्रीनकार्ड

महक अपना नाम सुनकर ठिठक गई। पापा पुकार रहे थे। उसने एक नजर पापा की ओर डाली। उनके मन की बात वह समझ गई। फिर भी अंजान बनकर पूछा, 'क्या काम था पापा ? '

पापा ने धीरे से कहा, 'महक, आज डा. विशाल तुम्हें देखने आने वाले हैं। याद है न? '

महक जानती थी, फिर भी बात टालते हुए बोली, 'पापा, अभी अमेरिका से आए मुझे मुश्किल से एक हफ्ता ही हुआ है और आप मुझे शादी करके विदा करने की बात कर रहे हैं? आप जानते हैं कि आपसे हजारों मील दूर रहकर मैं आपसे मिलने के लिए कितना तरसती थी। लेकिन यहां आते ही आपने मुझे भेजने की बात शुरू कर दी। '

बेटी की बात सुनकर अविनाश की आंखों में आंसू आ गए। भावुक स्वर में बोले, 'महक, मैं भी यहां तुम्हारे लौटने के दिन गिन रहा था। तुम जानती हो कि माता-पिता की भी बच्चों के प्रति कुछ जिम्मेदारी, कुछ कर्तव्य होते हैं। वरना कौन माता-पिता अपने बच्चे को अपनी आंखों के सामने से दूर करना चाहता है? और इस विशाल को तो मैं बचपन से जानता हूं। तुम दोनों डाक्टर हो, तो क्लिनिक खोल लेना। प्रैक्टिस अच्छी चलेगी। और तुम्हारे पास तो ग्रीनकार्ड भी है। अगर डा. विशाल चाहे तो तुम दोनों अमेरिका में भी बस सकते हो। 'महक ने एक नजर पापा पर डाली और जवाब दिया, 'पापा, आपकी इच्छा है तो मैं डा. विशाल को देख लूंगी। हां, लेकिन एक बात कह दूं, अंतिम पसंद मेरी ही होगी। 'महक ने इस अधिकार का उपयोग करते हुए विशाल को मना कर दिया तो अविनाश को बहुत दुख हुआ। फिर महक ने कई डाक्टर और इंजीनियर देखे, लेकिन किसी लड़के को पसंद नहीं किया। इसलिए एक दिन अविनाश ने उसे बुलाकर कहा, 'महक, आज तुम्हारी मां जीवित होती तो बात अलग थी। वह तुम्हें छोटी उम्र में छोड़कर चली गई। लेकिन मैंने तुम्हें मां की कमी महसूस नहीं होने दी। इसलिए आज मैं संकोच के साथ कह सकता हूं कि मैं पुरानी सोच वाला नहीं हूं। तुम्हारी पसंद मुझे मंजूर है। मैं जानता हूं कि बच्चों में माता-पिता के संस्कार होते हैं। इसलिए तुम्हारी पसंद पर मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। मैंने तुम्हें अच्छे संस्कार दिए हैं। अगर तुम अपनी पसंद के किसी लड़के से शादी करना चाहती हो तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं। मैं धूमधाम से तुम्हारी शादी करूंगा। अगर तुम ने अमेरिका में ही शादी कर ली है तो भी मुझे कोई समस्या नहीं है। 'यह सुनकर महक जोर से हंस कर बोली, 'पापा, क्या आप ऐसा सोचते हैं कि मैं अमेरिका में शादी करके यहां लड़के देखने का ढोंग करूंगी? 'महक का जवाब सुनकर अविनाश की चिंता और बढ़ गई। बोले, 'महक, सभी लड़कों ने तुम्हारे लिए हां की है, लेकिन तुम्हें कोई पसंद नहीं आता। अब तो मेरे ध्यान में कोई अच्छे लड़के भी नहीं हैं। अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं अखबार में विज्ञापन दे दूं। 'महक ने बस इतना कहा, 'ठीक है, ऐसा कर दीजिए। 'कुछ दिनों बाद अविनाश को महक के लिए सताईस डाक्टर और तीस इंजीनियरों के पत्र मिले। उन्हें विश्वास था कि इतने उम्मीदवारों में से कोई न कोई तो महक को पसंद आएगा। उन्होंने ध्यान से सभी पत्र पढ़े, उनमें से दस लड़कों को चुना और अलग-अलग समय पर बुलाया।महक सभी लड़कों से अच्छी तरह बात करती। हर बार पापा को आशा होती कि अब वह किसी को पसंद कर लेगी। लेकिन जब उसने सभी को मना कर दिया तो अविनाश को चिंता के कारण दिल का दौरा पड़ गया।महक डाक्टर थी, इसलिए तुरंत इलाज शुरू किया। थोड़ी देर बाद जब आराम मिला तो अविनाश धीरे से बोले, 'महक, इस दर्द पर कोई दवा असर नहीं करेगी। मुझे जिस दवा की जरूरत है, वह तुम दे सकती हो, लेकिन दे नहीं रही हो। अब एक काम करो, मुझे जहर दे दो, ताकि मैं तुम्हारी चिंता से मुक्त हो जाऊं। 'पापा के ऐसे शब्द सुनकर महक टूट गई। वह फूट-फूटकर रोने लगी। लेकिन तुरंत संभल गई कि दिल के मरीज के सामने रोना ठीक नहीं। आंसू पोंछकर बोली, 'पापा, इस महीने मैं जरूर किसी लड़के को पसंद कर लूंगी। आप जल्दी ठीक हो जाइए। अगर आपको कुछ हो गया तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगी। 'महक की बात जैसे चमत्कार बन गई। कुछ ही दिनों में अविनाश ठीक हो गए। एक दिन महक ने आकर कहा, 'पापा, आपको एक नए व्यक्ति से मिलवाऊं। यह हैं डा. सिद्धिता। 'फिर थोड़ा रुककर शर्माते हुए बोली, 'मुझे पसंद हैं। 'अविनाश ने एक नजर सिद्धित पर डाली। उन्हें लगा कि इससे तो कई बेहतर लड़के महक ने तुकरा दिए थे। आर्थिक स्थिति पूछने पर वह मध्यमवर्गीय लगे। लेकिन महक की पसंद पर विश्वास कर उन्होंने कुछ नहीं कहा और आशीर्वाद देकर मुस्कराते हुए कमरे से बाहर चले गए।उस रात उन्हें नींद नहीं आई। सुबह उनकी आंखें लाल थीं। नाश्ते के समय महक ने पूछा, 'पापा, आप सो नहीं पाए क्या? 'अविनाश मुस्कराकर बोले, 'डाक्टर की नजर मरीज पर होती है। 'लेकिन महक मानने वाली नहीं थी। बोली, 'पापा, मेरी इच्छा तो आपके साथ और समय बिताने की है। लेकिन आप शादी की जल्दी कर रहे हैं। कहीं आपको यह चिंता तो नहीं कि शादी के बाद मैं चली जाऊंगी? अविनाश कुछ देर चुप रहे, फिर बोले , 'महक, यह दुख तो है ही। लेकिन बताओ, इतने लड़कों के बाद तुमने सिद्धित को क्यों चुना? 'महक मुस्कराई, 'कारण बहुत सरल है पापा। जो लड़के आए थे उनकी नजर मेरे ग्रीनकार्ड पर थी। मैंने उनकी परीक्षा लेने के लिए अजीब शर्तें रखीं। सुबह का काम वे करें, शाम का खाना भी वही बनाएं, शापिंग का सामान भी वही उठाएं और सबने मान लिया! ऐसे 'हां में हां' मिलाने वाले लड़के मुझे पसंद नहीं। आप ही बताइए, आपको ऐसे दामाद पसंद आते? ' 'लेकिन सिद्धित अलग है। उसने कहा था कि लोग खुद को बेचने को क्यों तैयार हैं? ग्रीनकार्ड हो या न हो, उससे क्या फर्क पड़ता है? अगर मैं होता तो वही शर्तें सामने रखता। तभी मुझे लगा कि जिसमें आत्मसम्मान न हो, उससे शादी करने से बेहतर अकेले रहना है। फिर सोच-विचार के बाद लगा कि सिद्धित सबसे अलग है और उसके साथ मैं खुश रहूंगी। 'थोड़ी देर रुककर वह भावुक होकर बोली, 'पापा सच कहूं तो मैं अमेरिका के जीवन से परेशान हो गई हूं। वहां हर समय पैसा ही सब कुछ है। जिंदगी भर उसी के पीछे भागना। उससे बेहतर है कि मैं यहां रहूं, शांति से जीवन जीऊं और मम्मी की जगह आपकी सेवा कर सकूं, ठीक है न पापा? 'पापा क्या जवाब देते?वे। प्रेम भरी आंखों से महक को देखते रहे।

वीरेंद्र बहादुर सिंह नोएडा–
मो– 8368681336ब

अदा, अकड़, आदत या कुछ और...?

लघुकथा

उसका नहाना-धोना हो चुका था। खाना-पीना भी निपट गया था। वो भी आम दिनों की तरह नहीं, सामान्य दिनों की अपेक्षा समय से पहले। आज उसे जाना जो था एक धार्मिक उत्सव में। झाड़फूंक होकर आए कपड़े तन पर सुशोभित होने को आतुर थे। देह कुर्सी पर तो निगाहें दीवार घड़ी पर थीं। बीते दिन की ही तो बात है यह।

टेबल पर रखे मोबाइल से पीं-पीं की आवाज़ आई। उसने अनमने मन से मोबाइल उठाया। मैसेज देखने के लिए व्हाट्सअप खोला। मैसेज के रूप में पर्व की बधाई के साथ एक संदेश था। उसी आयोजन में भागीदारी के अनुरोध के तौर पर, जिसमें भागीदारी की तैयारी सवेरे से चल रही थी।

उसका तुनक-मिज़ाज मन विचलित सा दिखा। दिमाग़ किसी के आग्रह या आमंत्रण को नकारने का आदी जो बन चुका था उसका। बरसों पुराने अंतर्द्वंद के चलते। अनुरोध या सलाह के विपरीत काम आत्मा को संतोष देता था शायद। पसंद आता था ज़माने की पसंद को नापसंद करना।

यह अदा थी, आदत थी, अकड़ थी या कोई मानसिक व्याधि, भगवान जाने। एक मुनाफ़ा ये झुलसे हुए मन पर मानो नमक सा छिड़क दिया था उसके। वो भी अनचाहे, अंजाने में। उल्टा सोचने व करने का अभ्यस्त मन अब मलीन था। खुली हवा की चाह में हुलसे हुए कपड़े हैंगर में फंसे हवा-रोधी वार्डरोब में क़ैद होने जा रहे थे। मनमर्ज़ी से नहीं, मन मसोस कर। एक झुलसे हुए मन के कारण।।

-प्रणय प्रभात-
श्योपुर (मप्र)

रोटी का जुगाड़

'मेहरबान, कद्रदान, ...आपकी जान, ...सबसे कीमती है, ...हमारी दवा, ...बेशकीमती है।' सड़क के किनारे फुटपाथ पर खड़ा वह चिल्ला रहा था। उसके आगे छोटे-बड़े आकार के पैकेटों का ढ़ेर लगा हुआ था और उसकी छोटी सी फुटपाथी दूकान लोगों के हुजूम से घिरी हुई थी। नुक्कड़ टी स्टॉल की तरफ जाते हुए काकुशि, गजाधर, दामोदर, मायाराम, हरिया, ओनागु और सुदामा भी भीड़ देखकर उधर ही रुककर खड़े हो गए। वह बोल रहा था, 'एक पैकेट लेकर जाइए, सोने से पहले, दो गोलियां, रोज खाइए। यह सुस्ती भगाती है, फूर्ती जगाती है, तंदुरूस्ती बढ़ाती है।' भीड़ में खड़े सुदामा ने झुक कर एक पैकेट उठाया और पैसा निकालने के लिए जेब की तरफ हाथ बढ़ाया। इतने में दवा वाला फिर चिल्लाया, 'यह आलस मिटाती है, चुस्ती जगाती है, कब्जियत हो कि जुलाब सब ठीक करती है, गैस मिटाती है, भूख जगाती है। आज आप दो रोटी खाते हैं कल से चार खायेंगे अगर हमारी दवा लेकर जायेंगे। ' यह सुनते ही जेब से पैसे निकालते हुए सुदामा का हाथ वहीं रुक गया। उसने दवा का पैकेट वापस रखा और बोला, 'भैया, हम आपकी दवा नहीं ले जाएंगे। दो रोटियों का जुगाड़ तो मुश्किल से होता है चार रोटियां किधर से लाएंगे? '

कृष्ण शिवपार्वती

महाझूठ

चेन्नई की गर्मी 43 डिग्री तक पहुंच गई थी. बिना एसी के एक मिनट भी नहीं रह पाने का व्हाट्सएप मैसेज 'बृंदावन अपार्टमेंट' ग्रुप पर आया। 'ईरान-इजराइल-अमेरिका युद्ध की गूंज: कोयले की आपूर्ति प्रभावित! आज आधी रात से 50 रुपये प्रति यूनिट बिजली! एसी उपयोगकर्ताओं के लिए जुर्माना! ' बस, एसी में चैन की नींद सो रहे सभी लोग उठकर बैठ गए और उन्हें पसीना आने लगा। हमेशा की तरह नाम रंगन सर ने अपने घर का मेन स्विच बंद कर दिया और बाहर आ गये। 'दोस्तों, अब यह गहनों को ढकने जैसा है, हमें देखना होगा और जारी रखना होगा। मुझे अब इसकी आदत हो गई है,' उन्होंने हाथ में पंखा लेकर कहा। 'क्या मतलब है सर? 50 रुपये?' आईटी कर्मचारी विग्नेश चिल्लाया। 'हां भाई, मेरा एक भाई बिजली बोर्ड में वायरमैन है। उसने मुझसे कहा था कि अगर मैं बल्ब भी जला दूं, तो भी मीटर पर रीडिंग मिसाइल की गति जैसी हो जाएगी!' रंगनाथन ने एक भयानक कल्पना को उजागर किया है।

ओत्तेरी सेल्वा कुमार
25/13, चंदियप्पा स्ट्रीट,चेन्नई 600012

ठेंगलाल की होशियारी

ठेंगा लाल के जीवन की एक बड़ी उपलब्धि ये थी कि उन्होंने एक मकान बना लिया था। ठेंगा लाल की वैसे तो कोई व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं थी। लेकिन अपनी इस एक व्यक्तिगत उपलब्धि को भी वे एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे और अपनी पीठ ठोंकते ना थकते थे। ठेंगा लाल के पिताजी सार्वजनिक उपक्रम में लेबर थे। अच्छी खासी -सैलरी थी। ठेंगा लाल जो थे वो अपने दम पर कुछ नहीं थे। जो थे पिताजी की संपत्ति के कारण थे। ठेंगा लाल चतुर आदमी थे। बाप के नौकरी में रहते उन्होंने एक घर बना लिया था। और घर के नीचे एक मार्ट डाल ली थी।ठेंगा लाल चिंदीचोर थे। दिनभर में कहीं एक कप चाय पीते हुए दिखाई नहीं देते थे। एक नंबर के कँजूस आदमी थे ठेंगालाल। कहीं किसी को कुछ खाते देखते तो उसकी प्लेट से उठाकर खा लेते। हर तरह के उलट फेर की उन्हें समझ थी। ठेंगा लाल ने हर तरह के धँधे में हाथ आजमाया लेकिन किसी धँधे में टिक ना पाए। ठेंगालाल हेरफेर करके इधर थोड़ा अमीर हुए थे। अमीर बनते ही उनकी चाल-ढाल और बात - व्यहवार में परिवर्तन दिखाई देने लगा था। उनकी आँखों पर अमीरी का चश्मा चढ़ गया था। उन्होंने एक और शौक पाल लिया था। शहर के रही किस्म के अमीरों के साथ उठने-बैठने लगे थे। वे अमीरों के साथ ऊठ -बैठकर खुद को भी अमीर मानने लगे थे। ऐसे लोग हमारे परिवार समाज में होते हैं। जो दूसरों के धन से अपने आपको धनी मान लेते हैं। ऐसे लोगों में ही थे हमारे ठेंगालाल।कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो घोड़े की रेस में खुद को घोड़ा मानकर दौड़ते हैं। लेकिन होते गदहे ही हैं। तो ठेंगालाल भी घोड़ों की दौड़ में गदहे बनकर शामिल हुए थे। शहर के लोग ये समझ रहे थे कि ठेंगालाल घोडे की रेस में दौड़ रहें हैं। इस तरह उनकी आँखों में अमीरी की परत चढ़ गई थी। उनको उनके आसपास के लोग चिरकुट टाईप के दिखाई देने लगे थे। उनका शहर बहुत भारी था। जिसका लेते खाकर पचा जाना चाहते थे। उनके घर में शादी थी। ठेंगा लाल को जब अड़ोस- पड़ोस के लोगों से काम लेना था। तो वे पड़ोसियों के पैरों में गिर -गिर पड़ते थे। उनके मुँह से किसी काम को करवाने के लिए जैसे फूल झर रहे थे।

महेश कुमार केशरी बोकारो
झारखंड पिन 829144

थैंक यू बॉस!

जिस तरह सूर्य ऊर्जा का अक्षय भंडार है उसी तरह मनुष्य कीड़ों का अक्षय भंडार है। हर मनुष्य के भीतर कीड़े रूंस ठूंस कर भरे होते हैं। किसीके भीतर संस्कार मर जाने के बाद भी संस्कार का कीड़ा कुलबुलाता रहता है तो किसीके भीतर बीसियों बार रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद भी भ्रष्टाचार का कीड़ा कुलबुलाता रहता है। किसीके भीतर हीनता के बोध से ग्रसित होने के बाद भी हद से अधिक बड़प्पना दिखाने का कीड़ा कुलबुलाता रहता है तो किसीके भीतर अप्पर लेबल का दुराचारी होने के बाद भी सदाचार का कीड़ा कुलबुलाता रहता है। किसीके भीतर घोर धर्मनिरपेक्ष होने के बाद भी धर्मसापेक्षता का कीड़ा कुलबुलाता रहता है तो किसीके भीतर सेल्फ रिस्पेक्ट की आड़ में सामान्य अवसर मिलते ही चमचागीरी का कीड़ा कुलबुलाता रहता है। किसीके भीतर देश प्रेम की आड़ में पार्टी प्रेम का कीड़ा कुलबुलाता रहता है तो किसीके भीतर चने के झाड़ पर चढ़ाए रखने का कीड़ा कुलबुलाता रहता है। मेरे भीतर बॉस बनने का कीड़ा हरदम कुलबुलाता रहता है। मुझे पता है कि मैं अपने बॉस का बॉस कभी नहीं बन सकता। किसी दूसरे अधीनस्थ को अपनी सीमाओं का पता हो या न, पर मुझे अपनी सीमओं का पूरा पता है। बॉस का बॉस बनने का मतलब होता है अपने करियर पर कुल्हाड़ा मारना। इसलिए अपने भीतर के कीड़े को जिंदा रखने के लिए मैं मोहल्ले के कुत्तों का बॉस हो जाता हूं। मतलब, ऑफिस में वे मेरे बॉस हैं तो ऑफिस से घर आते ही मैं कुत्तों का बॉस हो जाता हूं। लेकिन इसका मतलब ये कदापि न लिया जाए कि मुझमें कुत्तों वाले गुण हैं। मैं भरा पूरा आदमी हूं। नख से शिख तक। दिमाग से लेकर असबाब तक। तो कल हुआ यों कि मुझे अपना बॉस मानने वाला कुत्तों का बॉस मेरे पास दुम हिलाता दौड़ा दौड़ा आया। हर अधीनस्थ अपने बॉस के आगे दुम हिलाता ही आता है , क्योंकि यह दौर दुमीय अधीनस्थों का दौर है। दुम न होने के बाद भी। तब दुम हिलाते हिलाते उसने मुझसे पूछा,' बॉस! बॉस! ये हमारे ग्राउंड में क्या हो रहा है?' 'क्या हो रहा है?''चार दिनों से वहां पर बड़ी सफाई चल रही है। ऐसी सफाई होती तो पहले कभी नहीं देखी?' उसका मन पता नहीं ग्राउंड में सफाई होते देख क्यों शंकित हुआ? मित्रो! जिन्हें गंदगी में दिनरात पड़े रहने की आदत पड़ जाती है उन्हें व्यवस्था में गलती से सफाई होती देख उल्टियां लग जाती हैं, दस्त लग जाते हैं। ' यार! रह गए न तुम भी कुत्ते के कुत्ते ही! देख जरा, देश के गधे, उल्लू एजुकेटिड होकर कहां के कहां पहुंच गए। जरा मोहल्ले से बाहर निकलो तो देश दुनिया का पता चले,' मैंने उसकी दुम सहलाते कहा। 'मोहल्ले से बाहर जाऊंगा तो दूसरी पार्टी के कुत्ते क्या मुझे काट नहीं देंगे? आदमी और कुत्ते की पूछ तभी तक होती है जब तक वह अपने मोहल्ले, पार्टी में रहे। अपने मोहल्ले और पार्टी से बाहर जाने वाले न घर के रहते हैं न घाट के,' उसने मुझे पता नहीं कैसा ज्ञान दिया कि मैं न समझने के बाद भी गदगद हो उठा। लगा, आने वाले समय में कुत्तों और आदमियों में अंतर कर पाना और भी जटिल हो जाएगा। 'अरे वह जो तुम्हारे लिए कुत्ता रैन बसेरा बना है न! सरकार जी उसको तुम्हें कुत्तार्पित करने आ रहे हैं' 'कुत्तार्पित बोले तो?' 'जिस तरह लोक को बने पुल, सड़क इत्यादि सरकार जी द्वारा बनाए, खाए जाने के बाद लोक को लोकार्पित होते हैं उसी तरह कुत्तों को बने प्रोजेक्ट कुत्तार्पित होते हैं, मतलब, कुत्तों के लिए समर्पित। कल से उस रैन बेसरे पर केवल और केवल तुम्हारा कानूनी अधिकार होगा। ' 'पर उसमें तो हम दो साल से रह रहे हैं। अब तो उसकी दीवारों का प्लस्तर भी झड़ने लग गया है, उसका फर्श तो महीने बाद ही उखड़ गया था , ' ये कुत्ते भी न! हमारे उच्चकोटि के गुणवत्तापूर्ण निर्माण की पोल खोल कर ही रहेंगे। सच कहूं तो ऐसे जीवों के लिए सरकार जी को कुछ भी नहीं बनाना चाहिए। 'तो क्या हो गया! जब सरकार जी को वक्त मिलेगा तभी उसका उद्घाटन होगा न! तुझे क्या पता उनके पास जनता के शिलान्यासों और उद्घाटनों की कितनी लंबी लिस्ट होती है। बेचारी वह जनहित के ऑनलाइन ऑफलाइन उद्घाटन, शिलान्यास करते करते थक जाती है। उद्घाटनों, शिलान्यासों के ताबड़तोड़ दौर में शुक्र मना कि सरकार जी तेरे रैन बसेरे का ऑफलाइन उद्घाटन करने पधार रही है। तू क्या जाने आदमी सरकार जी बन जाने के बाद कितना व्यस्त हो जाता है?' 'मतलब?'' मतलब अब वह स्थाई रूप से तुम्हारे लिए खुल जाएगा। तब तुम जो चाहो उसमें करो।' 'वह तो हम पहले से ही कर रहे थे,' बेशर्म कहीं का,' पर उसमें आज ये कुर्सियां क्यों? क्या हम कुत्ते उन पर बैठेंगे?'' नहीं।' 'आज जब उसका विधिवत् कुत्तार्पण होगा उन पर उनके व्यवस्था चालक बैठेंगे। 'फिर तो वह रैन बसेरा उनके व्यवस्था चालकों को समर्पित हुआ न!' ' नहीं! उसके बाद उसमें तुम ही रहोगे, जैसे तुम्हारा मन करे। ' 'मतलब?' कुत्ते ने मेरे घर की ओर देखा तो मैंने कहा,' मतलब ये कि अबसे तुम उसमें वैध रूप से रहोगे। पहले अवैध रूप से रह रहे थे। अब तुम्हारा इस रैन बसेरे का मालिकाना हक सरकार तुम्हें दे रही है।' 'मतलब अब हमें...' 'हां!' 'मतलब सरकार अब कुत्ता कल्याण की सोचने लगी है?' 'हां।' 'तो आदमियों का कल्याण के सब प्राजेक्ट पूरे हो लिए क्या?' 'नहीं। कुत्तों, गिद्धों, सियारों के कल्याणों के प्राजेक्टों में ही आदमी का कल्याण छिपा होता है,' मैंने सच सा कुछ कहा और उसके पास से खिसक लिया। इस डर से कि कहीं कोई हमारी रील न बना रहा हो। मैं ठहरा अंधव्यवस्था उपासक! और वह मेरा थैंक यू कर कहीं खड़ा खड़ा मुझ पर बड़ी देर तक हंसता रहा।

अशोक गौतमगौतम
निवास, अप्पर सेरी रोड़,
नजदीक मेन बाटर टैंक,
सोलन-173212 हि.प्र.

व्यंग्य
तीसरी आँख